ADVERTORIAL

सहज योग परिवार की ओर से

महाराज अग्रसेन जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी
संस्थापिका , सहज योग ध्यान

"1 ईंट एक रुपए" सिद्धांत

माता श्री महालक्ष्मी के आशीर्वाद से महाराज अग्रसेन का यह विचार था कि कोई भी व्यक्ति निर्धन या आश्रित न रहे। उन्होंने "1 ईंट, 1 रुपए" के सिद्धांत से सामुदायिक सहयोग और उद्यमिता को बढ़ावा दिया, जिससे कोई भी आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति समाज की मदद से आत्मनिर्भर बन सकता था। इस योजना ने समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित किया और उनके राज्य में समान अवसर उपलब्ध कराने की निरंतर कोशिश की गई—जो कि श्री महालक्ष्मी तत्व का वास्तविक और पूर्ण सिद्धांत है।

महाराज अग्रसेन को अहिंसा का प्रतीक, शांति के संदेशवाहक, त्याग, करुणा, समृद्धि और सच्चे समाजवादी के रूप में जाना जाता है।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

शांति के दूत, सम्राट महाराजा अग्रसेन का जन्म प्रतापनगर के राजा वल्लभ के घर हुआ था। वर्तमान समय के अनुसार, महाराजा अग्रसेन का जन्म लगभग 5000 साल पहले हुआ था। राजा वल्लभ सूर्यवंशी थे और अग्रसेन उनके सबसे बड़े पुत्र थे। श्री महालक्ष्मी व्रत के अनुसार, उस समय द्वापर युग का अंतिम चरण चल रहा था।

अग्रोहा/अग्र गणराज्य महाभारत युद्ध से करीब 51 साल पहले स्थापित हुआ था। (1) भविष्य पुराण के अग्रवंश, (2) वंशानुकीर्तनम् और (3) ऊरु चरितम् के लेखकों के अनुसार, महाराजा अग्रसेन ने लगभग 5000 साल पहले महाभारत के समय में अग्रोहा पर शासन किया। इस विश्वास की पुष्टि महाभारत के एक श्लोक में अग्रायन गणराज्य के उल्लेख से होती है।

राजकुमार अग्रसेन बहुत कम उम्र में ही अपनी करुणा के लिए प्रसिद्ध हो गए थे। उन्होंने कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया और उनकी प्रजा उनके व्यवहार से बहुत प्रसन्न रहती थी।

एक यज्ञ के दौरान, महाराज अग्रसेन ने देखा कि बलिदान के लिए लाए गए घोड़े ने बेदी से भागने की कोशिश की। इस दृश्य ने उनके हृदय को द्रवित कर दिया, और उन्होंने सोचा कि मूक प्राणियों का बलिदान कैसे समृद्धि ला सकता है? तभी उनके मन में अहिंसा का विचार गहराई से बैठ गया।

इस विषय पर उन्होंने अपने मंत्रियों से चर्चा की। मंत्रियों ने चेताया कि अगर महाराज अहिंसा की ओर झुकते हैं, तो पड़ोसी राजा इसे उनकी कमजोरी समझकर हमला कर सकते हैं। लेकिन महाराज अग्रसेन ने दृढ़ता से कहा कि हिंसा और अन्याय का अंत करना कमजोरी नहीं, बल्कि सच्ची शक्ति का संकेत है।

इस प्रकार, उन्होंने अपने राज्य में हिंसा पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया और जीवन की पवित्रता और करुणा का संदेश फैलाया। उनके इस निर्णय ने न केवल उनके राज्य की मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाया, बल्कि हर जीव के प्रति करुणा और सम्मान का एक आदर्श भी स्थापित किया।

महाराजा अग्रसेन की तपस्या और हरिद्वार में श्री महालक्ष्मी का वरदान

अग्रसेन ने अपनी तीर्थ यात्रा फिर से शुरू की और हरिद्वार पहुँचे, जहाँ उन्होंने ऋषि गर्ग की शरण ली। गर्ग मुनि के सान्निध्य में उन्होंने श्री महालक्ष्मी की आराधना प्रारंभ की। (हरिद्वार में जिस स्थान पर महाराजा अग्रसेन ने तपस्या की थी, उसे अब "महाराजा अग्रसेन घाट" के नाम से जाना जाता है।)

इस बीच, जब महारानी माधवी को हरिद्वार में अग्रसेन की गहन तपस्या के बारे में पता चला, तो वह भी उनकी सेवा के लिए वहाँ चली गईं। दोनों ने मिलकर श्री महालक्ष्मी की पूजा की।

प्रसन्न होकर, श्री महालक्ष्मी ने अग्रसेन को वरदान दिया, जिसमें कहा गया कि इंद्र उनके नियंत्रण में रहेंगे, और उनके वंश को कभी दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा। वंश सदैव समृद्ध रहेगा। श्री महालक्ष्मी ने स्वयं को अग्रसेन के वंश की संरक्षक देवी घोषित कर दिया।

तनाव के बीच सौहार्द: इंद्र का कोल्हापुर में महाराजा अग्रसेन के साथ समझौता

खुशी में, महाराजा अग्रसेन कोल्हापुर चले गए, जहाँ उन्होंने नागराज की बेटियों से विवाह किया। परिणामस्वरूप, अग्रसेन की ताकत और प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई।

जब इंद्र को अग्रसेन द्वारा श्री महालक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने और नागराज की बेटियों से विवाह करने की बात पता चली, तो वह चिंतित हो गए। तब इंद्र ने, ऋषि नारद के साथ, महाराजा अग्रसेन से युद्धविराम की माँग की।

"1 ईंट, 1 रुपए" सिद्धांत

अग्रोहा की समृद्धि देखकर पड़ोसी राजाओं में ईर्ष्या उत्पन्न हो गई, पर उन्होंने कभी इस पर विचार नहीं किया कि महाराज अग्रसेन ने समाज की उन्नति और विकास के लिए कितने महत्वपूर्ण कार्य किए थे। उनके सिद्धांत केवल उनके शासनकाल में ही नहीं, बल्कि आज भी भारतीय समाज में अत्यधिक प्रभावशाली माने जाते हैं।

महाराज अग्रसेन द्वारा स्थापित समाज का दृष्टिकोण और उनके आदर्श सामाजिक समानता, भाईचारे, और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते थे। उनके सिद्धांतों में हर व्यक्ति को सम्मान और अधिकार देने की भावना निहित थी।

माता श्री महालक्ष्मी के आशीर्वाद से महाराज अग्रसेन का यह विचार था कि कोई भी व्यक्ति निर्धन या आश्रित न रहे। उन्होंने "1 ईंट, 1 रुपए" के सिद्धांत से सामुदायिक सहयोग और उद्यमिता को बढ़ावा दिया, जिससे कोई भी आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति समाज की मदद से आत्मनिर्भर बन सकता था। इस योजना ने समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित किया और उनके राज्य में समान अवसर उपलब्ध कराने की निरंतर कोशिश की गई—जो कि श्री महालक्ष्मी तत्व का वास्तविक और पूर्ण सिद्धांत है।

हमें महाराज अग्रसेन के समान वैश्विक दृष्टिकोण अपनाना होगा

समाज में कोई भेदभाव न हो, इसलिए महाराज अग्रसेन ने कृषि और दुग्ध व्यापार को मुख्य आधार बनाया, जिससे निरंतर आर्थिक समृद्धि होती रही। यह मॉडल आज के युग में भी प्रेरणादायक है। कालांतर में, महाराज अग्रसेन की कीर्ति को आगे बढ़ाते हुए और देवी श्री महालक्ष्मी के गुणों को अपनाते हुए, अग्रवाल समाज आज भी सेवा के क्षेत्र में अग्रणी बना हुआ है।

लेकिन आज के समय में, यह देखने को मिल रहा है कि श्री लक्ष्मी को "चंचला" कहे जाने वाली भ्रांतियां समाज में फैल गई हैं। हर इंसान अपनी ही सीमाओं में बंध गया है, और मुट्ठीभर लोग ही समाज के उत्थान के बारे में सोचते हैं।

हम सब संयम कहां खो बैठे हैं? अपने मार्ग से भटक क्यों गए हैं? हमारे संतों की जो योग्य दिशा दिखाने की आंतरिक प्रेरणा थी, वह अब लुप्त हो गई है।
यह समय आत्म निरीक्षण का है, यह सोचने का कि हम कैसे सही मार्ग पर लौट सकते हैं। हमें अब खुद का गुरु बनना होगा। पांडित्य तो बहुत इकट्ठा कर लिया, पर हम अहंकार और षड रिपुओं से खुद को भर बैठे हैं।

अब समय आ गया है कि हम देवी श्री महालक्ष्मी के गुणों को अपने भीतर धारण करें। हम उन्हें केवल धन के स्रोत के रूप में न देखें, बल्कि अपनी मानसिक भ्रांतियों को दूर करें और सोचें कि कैसे महालक्ष्मी तत्व को स्वस्थ समाज में जागृत किया जाए।

हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर की कृपा तभी मिलेगी जब हम अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर, अपने से और अपनों से आगे सोचेंगे। हमें महाराज अग्रसेन के समान वैश्विक दृष्टिकोण अपनाना होगा। देवी श्री महालक्ष्मी का जो शुद्ध ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया, उसे हमें भी अपने जीवन में स्थापित करना होगा।

सहज योग ध्यान के माध्यम से हम देवी श्री महालक्ष्मी के गुणों को अपने भीतर धारण कर सकते है

इसके लिए सबसे पहले हमें अपने मन और शरीर को स्थिरता में रखते हुए शुद्ध आत्मज्ञान की इच्छा करनी होगी, जैसे कि श्री शिव ने महाराज अग्रसेन को देवी की उपासना का मार्ग दिखाया था। हमें भी उसी देवी महालक्ष्मी से संतुलन की प्रार्थना करनी चाहिए। संतुलन मिलते ही, मनुष्य के भीतर शांति और प्रसन्नता के साथ एक खोज शुरू हो जाती है—एक "जिज्ञासा" जो उसे भीतर की शक्ति की ओर ले जाती है।

इस खोज के दौरान, परमात्मा उसकी सहायता करते हैं और उसे सत्य गुरु या सही मार्ग से जोड़ देते हैं। धीरे-धीरे, वह मध्य मार्ग की ओर आकर्षित होने लगता है क्योंकि आत्मज्ञान उसे उसकी पवित्र कुंडलिनी शक्ति से जोड़ देता है। यही कुंडलिनी शक्ति रीढ़ की हड्डी के चक्रों, या ऊर्जा केंद्रों, से संबंध रखती है। जब उसे इन चक्रों का ज्ञान होने लगता है, तो उसकी जिज्ञासा और बढ़ जाती है, और उसकी आंतरिक परतें साफ होने लगती हैं। षड रिपु (छह विकार) धीरे-धीरे धूमिल हो जाते हैं, और दिव्य ऊर्जा का प्रवाह बढ़ने से मनुष्य का स्वभाव करुणा और प्रेम से भर जाता है।

जैसे-जैसे मनुष्य सत्य से जुड़ता है, उसे अपने भीतर की गलतियां आत्मदर्पण में साफ दिखाई देने लगती हैं, जिन्हें वह ठीक करने का प्रयास करता है। पहले जो लालच, लोभ और स्वार्थ उसकी दृष्टि में आते थे, वे अब साक्षीभाव में बदल जाते हैं। अब वह किसी विकार से बंधा नहीं होता जो उसे पतन की ओर ले जाए, वह मन के पार चला जाता है।

ऐसे व्यक्तित्व वाले लोगों पर जब श्री लक्ष्मी का आशीर्वाद होता है, तो वे उदार बन जाते हैं और कंजूसी उनसे दूर हो जाती है। श्री लक्ष्मी जी की कृपा से ऐसे लोग समाज में सुरक्षा और सहारा प्रदान करते हैं, विशेषकर बच्चों और स्त्रियों को। दुःख में मदद करने का उनका स्वभाव होता है, और वे प्रेम और करुणा से भरे होते हैं।

श्री लक्ष्मी तत्व से श्री महालक्ष्मी तत्व के सफर तक

जब तक हम श्री लक्ष्मी तत्व से जुड़े रहते हैं, हम केवल अपने नाभि चक्र या भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित रहते हैं। लेकिन जब हम श्री महालक्ष्मी से योगिक रूप से जुड़ते हैं, तब हम व्यापक और समग्र दृष्टिकोण अपनाते हैं। श्री महालक्ष्मी वह देवी हैं, जो उन्हीं के पास आती हैं, जिनके भीतर संतोष और उदारता होती है। ऐसे लोग देने में झिझकते नहीं, बल्कि सेवक भाव से मदद करते हैं।

आज के समय में, श्री महालक्ष्मी तत्व की उपेक्षा हो रही है। जहाँ उदारता और आनंद होना चाहिए, वहां "मैं, मेरा और अहंकार" ने स्थान ले लिया है। लेकिन जब मनुष्य में महालक्ष्मी तत्व जागृत होता है, तो नौ प्रकार की लक्ष्मी की अभिव्यक्ति होती है, जिनमें से एक श्री महालक्ष्मी भी हैं।

श्री गृह लक्ष्मी के रूप में, स्त्री गृह की स्वामिनी बनकर विवेकशीलता से घर और परिवार को पालती है। वह प्रतिक्रिया करने या किसी बात पर एतराज करने के बजाय सभी को प्यार से संभालती है।

निर्लिप्सा भी श्री महालक्ष्मी तत्व का गुण है—ऐसा व्यक्ति भौतिक मोह से मुक्त होता है, लेकिन राजा जनक की तरह, वह संसार में रहते हुए भी निर्लिप्त रहता है। वह कभी भी अपने लाभ के लिए कुछ नहीं करता। महाराज अग्रसेन महालक्ष्मी तत्व से भरपूर थे, इसलिए उनका व्यक्तित्व आज भी चमकता है।

श्री महालक्ष्मी तत्व की वास्तविकता यह है कि यह मनुष्य को सत्य की ओर ले जाता है। उसकी निरंतर उन्नति होती है, और मध्य मार्ग में ही उसकी पूर्णता संभव है। श्री महालक्ष्मी तत्व से ही मनुष्य आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करता है और महामानव की श्रृंखला में अपना स्थान पाता है।

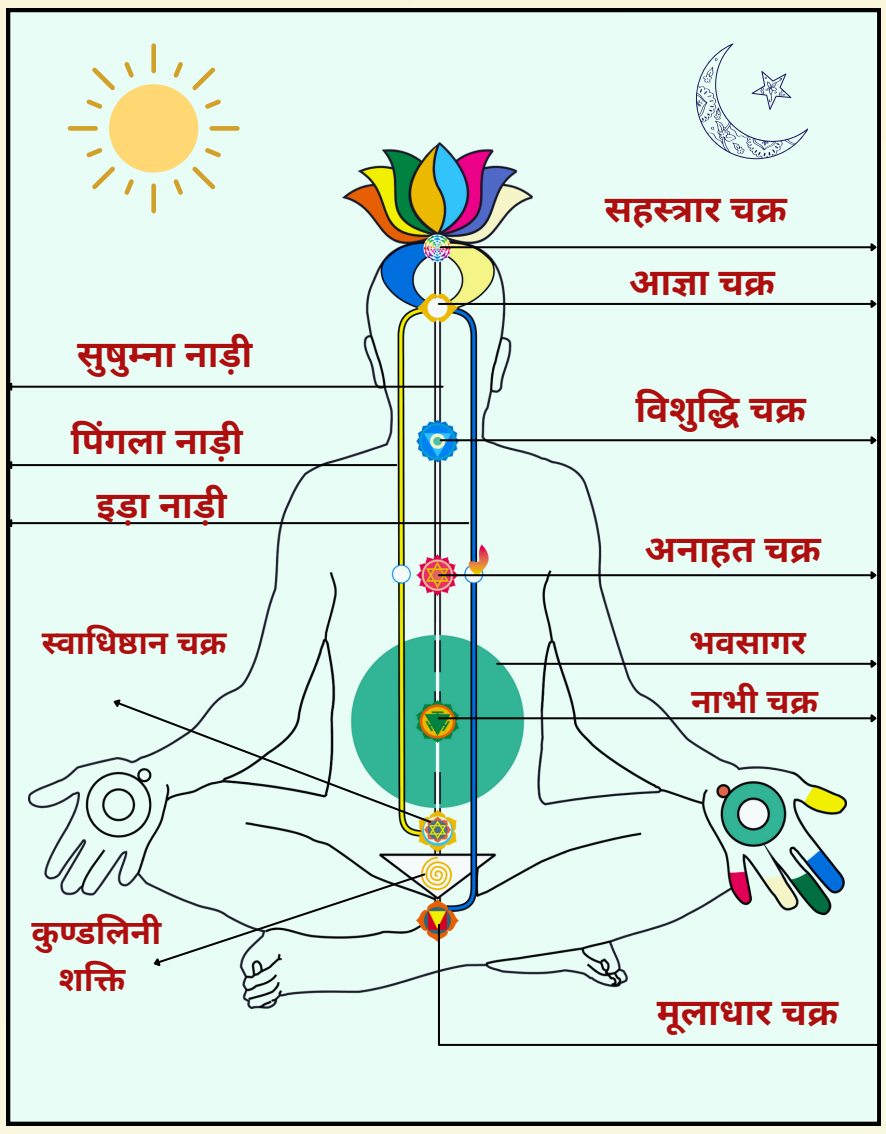

मानव सूक्ष्म यंत्र

प्रत्येक मनुष्य के शरीर में जन्म से ही एक सूक्ष्म तंत्र होता है। जिसमें तीन नाड़ियां,सात चक्र और परमात्मा की दी हुई शक्ति विद्यमान है। परमात्मा की यही शक्ति जो कि कुंडलिनी शक्ति के नाम से जानी जाती है, हमारी रीढ़ की हड्डी के सबसे निचले भाग में सुप्त अवस्था में रहती है।

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा स्थापित सहज योग ध्यान के माध्यम से , कोई भी व्यक्ति आसानी से श्री महालक्ष्मी तत्व को जागृत कर सकता है और इसी जीवन में उनका पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है!

सहज योग ध्यान केंद्र - हिसार
हर रविवार सुबह 10.30 बजे, लाहौरिया फैक्ट्री
रिलायंस पेट्रोल पंप के सामने
राजगढ़ रोड, हिसार, हरियाणा
8950424236 | 8708076414

FREE

सहज दर्शन प्रचार और प्रसार समिति
सहज योग ध्यान सदैव निःशुल्क है।

adlakhagk@gmail.com | +91 98712 78936
www.nirmaldham.org | www.sahajayoga.org.in